विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग नवम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:२८/१२/२०२० (एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

श्लोक९.

स भग्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथि:।

अङ्केनादाय वैदेहीं पपात् भुवि रावण:।।

अन्वय:

(तत:)भग्नधन्वा विरथ:हताश्व हतसारथि:स: रावण: वैदेहीं अङ्केन आदाय भुवि पपात् ।

शब्दार्था:

भग्नधन्वा - टूटे हुए धनुष वाला , विरथ: - रथ से रहित

हताश्व:-मरे हुए घोड़ों वाला , भुवि – भूमि पर

हतसारथि - मारे सारथी वाला , अङ्केन – गोद से

आदाय – लेकर , वैदेहीं - सीता को ,पपात् - गिर पड़ा

अर्थ- (तब) टूटे हुए धनुष वाला ,रथ से विहीन ,मारे गए घोड़ों व सारथि वाला वह रावण सीता को गोद में लेकर भूमि पर गिर पड़ा।